भारत का सरल इतिहास

An

EASY HISTORY OF INDA

For

Anglo-Vernacular and Vernacular Schools

Standard III and IV

By

RAJGOVIND PANDEYA B. A., B. L.

भारतका सरल इतिहास

ऐङ्गलो वरनेक्युलर तथा वरनेक्युलर स्कूलोंके

दरजा ३ और ४ के लिये

श्री राजगोविन्द पाण्डेय बी० ए० बी० एल०

अध्यापक—

श्रीमाहेश्वरी विद्यालय कलकत्ता

चौथी बार] जुलाई १९३७ [मूल्य ८ आने

प्रकाशक—

कामता प्रसाद वर्म्मा
बाल साहित्य प्रकाशक समिति
१७२ए. हरिसन रोड, कलकत्ता

मुद्रक—
उमादत्त शर्मा,
रत्नाकर-प्रेस,
११।ए सैयदसाली लेन
कलकत्ता।

विषय-सूची

हिन्दू काल

अङ्गरेज काल

(ग)

अङ्गरेज काल

अध्याय

हिन्दू-काल

हिन्दू-काल

हिन्दू-काल

भारतका सरल इतिहास

उपक्रमणिका

हम जिस पृथ्वीपर बसते हैं, वह दो भागोंमें बँटी है। स्थल और जल। इन दोनोंके भी पाँच-पाँच भाग हैं। स्थलके भाग आस्ट्रेलिया, यूरोप, अमेरिका, अफ्रिका, और एशिया हैं। ये पाँचों भाग महादेशके नामसे पुकारे जाते हैं। और जलके भाग प्रशान्त महासागर, ऐटलाटिक महासागर, हिन्द महासागर और उत्तरी तथा दक्षिणी महासागर हैं।

परिचय

हमारा देश भारतवर्ष एशिया महादेशमें है। इसकी शकल त्रिकोणाकार है। जब आर्य लोग इस देशमें आकर बस गये, तब उन्होंने इसका नाम आर्यावर्त्त रक्खा। कुछ कालके बाद यहाँ भरत नामके एक प्रतापी राजा हुए। उनके नामसे इसका भरतखण्ड, भारत अथवा भारतवर्ष नाम पड़ा। पारसी सिन्धु नदीको हिन्दु कहते हैं। इसलिये उनके द्वारा इसका नाम हिन्दुस्तान हुआ। अंगरेज लोग इसे इण्डियाके नामसे पुकारने लगे क्योंकि वे सिन्धु नदको इण्डस कहते हैं।

प्राकृतिक-विभाग

भारतवर्षको प्रकृतिने दो हिस्सोंमें बाँटा है-उत्तरी और दक्षिणी। उत्तरी भाग हिमालयसे विन्ध्याचल तक और खम्भातकी खाड़ीसे महानदी तक फैला है। दक्षिणी भाग विन्ध्याचलसे लेकर समुद्रतट तक है।

सीमा

हिन्दुस्तानके उत्तरमें हिमालय पहाड़, पूरबमें बरमा, आसाम और बंगालकी खाड़ी, दक्षिणमें हिन्दमहासागर और पश्चिममें अरबसागर, अफगानिस्तान और बलूचिस्तान हैं।

प्रकृति द्वारा सुरक्षित

यह देश चारों ओरसे पहाड़ों और समुद्रोंसे घिरा है, इस कारण प्राचीन कालमें यह बाहरी शत्रुओंके भयसे बिल्कुल सुरक्षित था। यहाँके रहनेवाले बड़े सुखसे रहते थे। किसीसे कोई सरोकार न था। केवल अपनी जरूरी चीजोंको पैदा करना, ईश्वर-भजनमें दिन बिताना और ज्ञानको बढ़ाना ही उनके मुख्य कर्म थे। इसीलिए यहाँके लोग सबसे अधिक ज्ञानी और सभ्य थे। उन्हींके ज्ञानकी [illegible] आज दुनियामें रोशनी फैली हुई है।

प्रश्न

(१) दुनियाके [illegible] और [illegible] भागोंके नाम लो।
(२) इसका नाम हिन्दुस्तान है, इसकी शकल कैसी है?
(३) [illegible] भिन्न भिन्न नाम क्या पड़ा?
(४) हिन्दुस्तानके विभाग और सीमा बताओ।
(५) हिन्दुस्तानके निवासी सबसे अधिक ज्ञानी क्यों हुए।

प्रश्न

✓(१) भारतवर्षके आदिम निवासी कौन थे ? वे किसके द्वारा हराये गये और इस समय कहाँ रहते हैं ?

✓(२) आर्य लोग पहले कहाँ रहते थे और वहाँसे कब दुनिया भरमें चारो ओर फैलने लगे ?

✓(३) आर्य लोग हिन्दुस्तानमें पहले पहल कहाँ आकर बसे ? वे आर्यो से किन-किन बातोंमें बड़े चढ़े और सभ्य थे ?

(४) आर्यो ने यहाँ पहले पहल कौन-कौनसे राज्य कायम किये ? उन राज्योंके राजा किनको सन्तान थे ? उनका हाल किन-किन ग्रन्थोंमें लिखा है ?

दूसरा अध्याय

रामायणकी कथा

बहुत पुराने समयमे कोशल नामका एक बड़ा विख्यात राज्य
उत्तरमे हिमालय और दक्खिनमे गंगातट तक फैला हुआ
राज्यकी राजधानी अयोध्या थी। अयोध्याके राजा
सूर्यवंशी राजाओमे रामचन्द्रजी अधिक प्रसिद्ध हो गये
। रा [illegible] । उनके तीन रानियाँ थीं। पहली
सबसे छोटी रानीका नाम कैकेयी
मित्राके लक्ष्मण और शत्रुघ्न और

प्रश्न

(१) भारतवर्षके आदिम निवासी कौन थे? वे किसके द्वारा हराये गये और इस समय कहाँ रहते हैं?

(२) आर्य लोग पहले कहाँ रहते थे और वहाँसे कब दुनिया भरमें चारों ओर फैलने लगे?

(३) आर्य लोग हिन्दुस्तानमें पहले पहल कहाँ आकर बसे? वे आर्यों से किन-किन बातोंमें बढ़े चढ़े और सभ्य थे?

(४) आर्योंने यहाँ पहले पहल कौन-कौनसे राज्य कायम किये? उन राज्योंके राजा किनकी सन्तान थे? उनका हाल किन-किन ग्रन्थोंमें लिखा है?

दूसरा अध्याय

रामायणकी कथा

बहुत पुराने समयमें कोशल नामका एक बड़ा विख्यात राज्य था। वह उत्तरमें हिमालय और दक्खिनमें गंगातट तक फैला हुआ था। इस राज्यकी राजधानी अयोध्या थी। अयोध्याके राजा सूर्यवंशी थे। सूर्यवंशी राजाओंमें रामचन्द्रजी अधिक प्रसिद्ध हो गये हैं। इनके पिता राजा दशरथ थे। उनके तीन रानियाँ थीं। पहली कौशल्या दूसरी सुमित्रा और सबसे छोटी रानीका नाम कैकयी था। कौशल्याके पुत्र रामचन्द्र सुमित्राके लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकयीके भरत थे।

राम सबमे बड़े थे, इससे और तीनों भाई उन्हे प्राणसे भी अधिक मानते थे। पर लक्ष्मणकी प्रीति उनमे सबसे अधिक थी। चारों भाई शूर-वीरता तथा और-और गुणोंमें अकेले थे। उन्हीं दिनोंमे अवधके पूर्वमे विदेह नामका भी एक बड़ा प्रसिद्ध राज्य था। इसकी राजधानी मिथिला थी। मिथिलाके राजा जनकने अपनी कन्या सीताका स्वयंवर स्थिर किया। उनके पास एक बहुत बड़ा शिवजीका-धनुष था। उन्होने सब देशके राजाओंको बुलाकर कहा, कि जो इस धनुषको चढाकर बाण चलायेगा, उसीको सीता जयमाल पहनायेगी। यह काम किसीके किये न हुआ। अन्तमें रामचन्द्रने उस धनुषको चढाया और सीताका ब्याह उनसे हुआ। लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्नकी शादी भी जनककी एक दूसरी लड़की तथा उनके भाईकी दो और कन्याओंसे हुई।

बुढापा आनेपर राजा दशरथने बड़े पुत्र रामको राजा बनाना चाहा। किन्तु यह सुनकर कैकेयी जलकर खाक हो गयी। उसने अपने पुत्र भरतको राजा बनाना चाहा। वह कोपभवनमे जा सोयी।

एक बार बूढ़े राजाने कैकेयीको दो वर देनेका वचन दिया था। जब राजा कैकयीके रंज होनेकी बात सुनकर उसे समझाने और प्रसन्न करने गये तब उसने उनसे वे दोनो वर माँगे। एक वरमे तो भरतको अयोध्याका राज्य और दूसरेमे रामचन्द्रको चौदह वर्षका वनवास। दशरथजी रामचन्द्रको प्राणसे भी अधिक मानते थे उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने कैकयीसे दूसरा वर माँगनेको कहा, परन्तु वह अपनी बातपर अड़ी रही।

राजा रावण सीताजीको हर ले गया। रावण राक्षस था। उसको रामचन्द्रजी परिवारके सहित मारकर सीताजीको ले आये। चौदह वर्ष बीतने पर वे अयोध्या लौटे। अयोध्याकी राजगद्दी उनको दी गयी। रामचन्द्रजी बड़े बली, दयालु और धार्मिक राजा थे। प्रजाको प्राणसे भी अधिक प्यार करते थे। प्रजाको प्रसन्न करनेके लिए उन्होंने सीताजीको भी छोड दिया था।

रामचन्द्रजीके बाद साठ राजा और अयोध्याके सिंहासनपर बैठे, इसके बाद अयोध्याका राज्य नष्ट हो गया।

महाभारतकी कथा

हस्तिनापुरमें कुरु नामके एक चन्द्रवंशी राजा राज्य करते थे। कुरुके वंशमें शान्तनुका जन्म हुआ। शान्तनुके तीन पुत्र थे, भीष्म, चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य। भीष्मने अपना विवाह नहीं किया। वे जन्म भर बाल ब्रह्मचारी रहे। चित्राङ्गद मर गया और विचित्रवीर्यकी स्त्रियाँ, काशीके राजाकी कन्यायें, अम्बिका और अम्बालिकासे धृतराष्ट्र और पाण्डु नामके दो पुत्र उत्पन्न हुए। धृतराष्ट्र जन्मके अन्धे थे, इसलिए पिताके मरने पर उन्हें हस्तिनापुरका राज्य नहीं मिला। छोटे पुत्र पाण्डु राजा बनाये गये।

पाण्डुके कुन्ती और माद्री नामकी दो रानियाँ थीं। कुन्तीके गर्भसे युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तथा माद्रीसे नकुल और सहदेव पैदा हुए थे। धृतराष्ट्रके दुर्योधन और दुःशासन आदि एक सौ पुत्र थे। कुरुके वंशमें होने पर भी धृतराष्ट्रके पुत्र कौरव और पाण्डुके पुत्र पाण्डव कहलाये।

सेनाके सेनापति बन कर दस दिन तक तो केवल भीष्मजीने घोर युद्ध किया था। फिर वे लड़ाईके मैदानमें ही बाण-शय्या पर सोते रहे। छ महीने बाद उनकी मृत्यु हुई। अन्तमें युधिष्ठिरकी जीत हुई। युधिष्ठिरको हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ दोनों ही राज्य मिले इतने आदमियोंके मरनेसे युधिष्ठिरको बड़ा दु:ख हुआ। वे अर्जुनके पोते परीक्षितको राज्य दे, भाइयों और द्रौपदीके साथ हिमालय चले गये। इसको महाप्रस्थान कहते हैं। कहते हैं, कि वे लोग वहीं बर्फमें गल कर मर गये।

वेद और मनुसंहिता

रामायण और महाभारतके सिवा वेद और मनुसंहितामें भी आर्योंके विषयमें बहुत सी बातें लिखी हैं। वेद चार हैं—ऋक्, साम, यजु. और अथर्व। इनमें ऋक्-वेद संहिता सबसे प्राचीन है। हर एक वेद दो भागोंमें बँटे है—मन्त्र और ब्राह्मण। मन्त्रमें इन्द्र, वरुण, वायु, अग्नि, सूर्य इत्यादिकी स्तुतियाँ हैं। ब्राह्मणमें यज्ञ, आदिकी व्यवस्था है। मनुसंहिता महर्षि मनुने बनायी है। इसमें समाज, धर्म और राजनीतिकी बातें हैं।

जाति-विभाग

...स समय आर्य लोग पंजाबमें आकर बसे, उस समय उनमें ...। नहीं था। धीरे-धीरे उनका वंश बढ़ने लगा। जब ...स उनकी जमीन छीन कर वे चारों ओर बसने लगे, तब उनसे लड़ना-भिड़ना भी पड़ने लगा। इसलिये उन्होंने आपस

सेनाके सेनापति बन कर दस दिन तक तो केवल भीष्मजीने घोर युद्ध किया था। फिर वे लड़ाईके मैदानमें ही बाण-शय्या पर सोते रहे। छः महीने बाद उनकी मृत्यु हुई। अन्तमें युधिष्ठिरकी जीत हुई। युधिष्ठिरको हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ दोनो ही राज्य मिले। इतने आदमियोंके मरनेसे युधिष्ठिरको बड़ा दुःख हुआ। वे अर्जुनके पोते परीक्षितको राज्य दे, भाइयों और द्रौपदीके साथ हिमालय चले गये। इसको महाप्रस्थान कहते हैं। कहते हैं, कि वे लोग वहीं वर्फमें गल कर मर गये।

वेद और मनुसंहिता

रामायण और महाभारतके सिवा वेद और मनुसंहितामे भी आर्योंके विषयमे बहुत सी बाते लिखी हैं। वेद चार हैं—ऋक्, साम, यजुः और अथर्व। इनमे ऋक्-वेद संहिता सबसे प्राचीन है। हर एक वेद दो भागोमे बँटे है—मन्त्र और ब्राह्मण। मन्त्रमे इन्द्र, वरुण, वायु, अग्नि, सूर्य इत्यादिकी स्तुतियाँ है। ब्राह्मणमे यज्ञ, आदिकी व्यवस्था है। मनुसंहिता महर्षि मनुने बनायी है। इसमे समाज, धर्म और राजनीतिकी बाते हैं।

जाति-विभाग

जिस समय आर्य लोग पंजाबमे आकर बसे, उस समय उनमें जाति-विभाग नहीं था। धीरे-धीरे उनका वंश बढने लगा। जब अनार्योंसे उनकी जमीन छीन कर वे चारों ओर बसने लगे, तब उन्हें उनसे लड़ना-भिड़ना भी पड़ने लगा। इसलिये उन्होने आपस

तीसरा अध्याय

गौतम बुद्ध

गोरखपुरसे ५० मील उत्तर और नेपालसे दक्खिन कपिलवस्तु नामका एक छोटासा राज्य था। वहाँके राजा थे शुद्धोदन। उनकी स्त्रीका नाम मायादेवी था। गौतम बुद्ध इन्हींके पुत्र थे। बुद्धदेवका जन्म ईसवी सन्से ५५७ वर्ष पहले हुआ था। जन्मके सात ही दिन बाद इनकी माता मर गयीं। पिताने बड़े लाड-प्यारसे पाला। नाम रक्खा सिद्धार्थ। इसके सिवा गौतम और शाक्य सिंह भी इनके नाम पड़े, क्योंकि ये शाक्यवंशी थे। अठारह वर्षकी उम्रमे यशोधरा नामकी एक सुन्दर राजकुमारीसे इनका व्याह हुआ।

सिद्धार्थको किसी बातकी कमी न थी। सभी सुखके सामान इकट्ठा थे, तो भी उनके मनको शान्ति न थी। वे हमेशा इसी चिन्तामें डूबे रहते, कि मनुष्य किस तरह रोग, शोक, बुढापा और मृत्युके दु खोसे छुटकारा पा सकता है। राजाने पुत्रके मनको विरागसे फेरनेके लिये बहुतसे उपाय किये, किन्तु सफल नहीं हुए। जब सिद्धार्थ तीस वर्षके हुए, तब एक दिन आधी रातको चुपके घरसे चल दिये और सन्यास ग्रहण कर लिया।

सन्यासी होकर सिद्धार्थ वैशाली गये। वहाँ राजगृहके दो पण्डितोसे शास्त्र पढने लगे। वहाँ उन्हे यही शिक्षा मिली, कि

जैनी जीवों पर इतनी अधिक दया दिखाते हैं, कि वे खटमल, जुएँ और मच्छड़ तक को नहीं मारते। जैनोंमे श्वेताम्बर और दिगम्बर दो पंथ हैं। श्वेताम्बर सफेद वस्त्र पहनते हैं और दिगम्बर नंगे रहते हैं। इन पंथोंके मानने वालोंकी संख्या करीब १५ लाख है। जैनियो-में भी हिन्दू धर्मकी तरह जाति भेद और देवी-देवताओंकी पूजा प्रचलित है। बौद्ध धर्मकी तरह इसका प्रचार और देशोंमे नहीं हुआ, केवल भारत भरमें ही रह गया। गुजरात, राजपूताना आदि स्थानो में जैनियोंका अधिकतर वास है।

प्रश्न

(१) बुद्धदेवके बारेमें क्या जानते हो? संक्षेपमें वर्णन करो।

(२) इस समय किस-किस देशके मनुष्य बौद्ध धर्मको मानते हैं?

(३) जैन धर्मको किसने चलाया? उसके बारेमें क्या जानते हो?

(४) भारतके किन-किन स्थानोंमें जैनी अधिकतर रहते हैं?

(५) जैन धर्मका सिद्धान्त क्या है?

मील देशको ले गया। वह विद्वानों और वीर पुरुषोंका बड़ा आदर करता था। सिकन्दर बिलूचिस्तान होता हुआ फारस पहुँचा और वहाँसे बैबलिन गया। वहीं पर उसकी मृत्यु हुई। उस समय उसकी उम्र केवल ३३ वर्षकी थी। सिकन्दरके मरने पर उसका सेनापति सेल्यूकस उसके जीते हुए हिन्दुस्तानके नगरोंका शासक हुआ।

प्रश्न

(१) सिकन्दर किस देशका राजा था? उसने कब भारत पर चढ़ाई की थी?

(२) पुरु कौन था? पुरुके साथ सिकन्दरने कैसा बर्ताव किया?

(३) सिकन्दरके मरने पर उसके भारतके जीते हुए स्थान किसके अधिकारमें आये।

पाँचवाँ अध्याय

हिन्दू राज्य

मुसलमानोंके आनेके पहले हिन्दुस्तानमें हिन्दुओंका राज्य था। उनमें मगध कुशन, मालवा, थानेश्वर, बङ्गाल और उड़ीसा राज्य विशेष प्रसिद्ध हो गये हैं।

मगध राज्य

इस समयके बिहारका ही प्राचीन नाम मगध है। मगध राज्यकी राजधानी पहले राजगृह थी किन्तु पीछे पाटलीपुत्र हुई, जो आज-कल पटना कहलाता है। मगधमें नीचे लिखे हुए प्रसिद्ध वंशके राजाओंने राज्य किया।

गया। वहाँ उसने अपनी चतुराईसे बहुतसी सेना इकट्ठी की और चाणक्य नामक ब्राह्मणकी सहायतासे नन्दको हरा कर मगधका राजा बन बैठा। राजा होने पर उसने अपनी माताके नामसे अपने वंशका नाम मौर्य वंश रखा। चाणक्य कूटनीतिका बड़ा ही विद्वान् था। यह चन्द्रगुप्तका मन्त्री बन कर रहने लगा।

चन्द्रगुप्तके समान न्यायी, बलवान और बुद्धिमान कोई दूसरा राजा मगधके सिंहासन पर नहीं बैठा। उसका लोहा सभी राजा-महाराजा मानते थे। गद्दी पर बैठनेके कुछ दिनों बाद सिकन्दरके सेनापति सेल्यूकसने चन्द्रगुप्त पर चढ़ाई की, पर उसे हार माननी पड़ी। उसने अपनी लड़की चन्द्रगुप्तको व्याह दी और अपना राज्य भी दे दिया। इसके बाद मेगस्थनीज नामक एक दूत चन्द्रगुप्तके दरबारमे रख कर वह अपने देशको लौट गया।

मेगस्थनीज़के लेख

मेगास्थनीज चन्द्रगुप्तके दरबारमें रह कर, उसके राज्यकी सब बाते लिखता गया। उसने लिखा है कि उस समय भारतवर्षमे कृषि और शिल्प विद्याकी बड़ी उन्नति थी। मनुष्य साहसी और सरल स्वभावके थे। वे झूठ कभी नहीं बोलते। कोई शराब नहीं पीता था। सती होनेका रिवाज जारी था। अपराधियोंको बहुत बड़ा दंड दिया जाता था। उनके हाथ-पैर काट लिये जाते थे। मनुष्यकी हत्या करने वालेको फाँसीकी सजा होती थी। तमाम हिन्दुस्तान एक सौ अठारह भागोंमे बँटा था। उसमे सात श्रेणीके मनुष्य रहते थे—(१) धर्म और विद्याके व्यवसायी (२) गो-भैंस पालने वाले (३) किसान

धर्मशाला, अस्पताल, तालाब और सड़के बनवायीं। अशोकने बौद्ध धर्मके प्रचारके लिये भी बहुत बड़े-बड़े काम किये। बौद्ध धर्मका प्रचार करनेके लिये यूनान, चीन, जापान और सिंहल आदि देशोंमे बौद्ध पण्डितोंको भेजा।

अशोक-स्तम्भ

भारत भरमे उन्होंने बुद्ध-देवकी मूर्त्तियाँ स्थापित कीं। पहाड़ो पर तथा जगह-जगह पत्थरके खम्भे गड़वाकर, उन-पर धर्मका आदेश खुदवाया। उनके राज्यमें कोई जीव-हत्या नहीं कर सकता था। बौद्ध भिक्षुक और ब्राह्मणोंको वे बहुत दान देते थे। वे इतने बड़े दानी थे, कि अपना राज्य तक दानमें दे डाला और आप भिक्षुक बन गये।

अशोकके मरने पर मौर्यवंशके कई एक राजा जैसे दशरथ, सम्प्रति, शालीशूक, देववर्मा, शतधन्वा और बृहद्रथ मगधकी राजगद्दी पर क्रमशः बैठे पर इनका राज्य धीरे-धीरे कमजोर होता गया और अन्तमें मगधका राज्य शुङ्गवंशवालोंके अधिकारमें आया। मौर्य वंशने इन अन्तिम राजाओंको [illegible] कुल [illegible] साल [illegible] ईस्वीसे पूर्व तक राज्य किया था।

शुङ्ग और कण्व वंश

मौर्य वंशके नष्ट होने पर शुङ्गवंश और उसके बाद कण्व वंशके हाथमें मगधका राज्य आया। शुङ्गवंशने १८४—७२ ईसवीसे पूर्व तक राज्य किया। इस वंशमे पुष्यमित्र और अग्निमित्र सबसे प्रसिद्ध राजा हुए। अग्निमित्रने बहुतसे राजाओंको जीत अश्वमेध-यज्ञ किया था और तबसे फिर हिन्दू-धर्मकी उन्नति आरम्भ हुई। इस वंशका अन्तिम राजा देवभूति था, जिसको उसके मन्त्री वासुदेवने मार कर कण्व राज्य कायम किया। कण्व राजवंशने ईसवीसे पहले ७२ से २७ वर्ष तक राज्य किया। इस वंशके अन्तिम राजा सुशर्मा को मार कर आंध्रवंशके राजाने मगधका राज्य अपने अधिकारमें कर लिया। ये आन्ध्र दक्षिण भारतके रहने वाले थे और पहले अशोकके अधीन थे। इस समयसे गुप्त वंशके उदय होने तक विहार शक या सीथियन जाति वालोंके अधिकारमे रहा।

कुशान-साम्राज्य

अशोकके मरने पर शक अथवा सीथियन नामकी एक जाति ने हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की। शक जातिमें कुशन वंश अधिक प्रसिद्ध हो गया है। इस वंश वालोंने अपने बाहुबलसे भारतवर्षके कुछ हिस्सोंको अधिकारमे करके एक राज्य कायम कर लिया। वह कुशन साम्राज्यके नामसे मशहूर हुआ। कनिष्क इस साम्राज्यके बड़े प्रतापी राजा हुए। पुरुषपुर, जो इस समय पेशावर कहलाता है, उनकी राजधानी थी। वे बौद्धधर्मको मानने वाले थे। श्रेष्ठ वैद्य चरक और

महान् पण्डित नागार्जुन उनकी सभाके सभासद थे। कनिष्कने शकाब्द नामका संवत् चलाया जो आज तक इस देशमें प्रचलित है। इसका आरम्भ ईसवी सन् ७८ से हुआ।

गुप्त वंश

गुप्त वंशवालोंने ३०८ ई० से राज्य करना आरम्भ किया और ३०० वर्ष तक राज्य किया। इस वंशके राजा चन्द्रवंशी क्षत्रिय थे। इस वंशमें चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, द्वितीय चन्द्रगुप्त, कुमार गुप्त, स्कन्द गुप्त, पुरगुप्त, नरसिंह गुप्त आदि प्रसिद्ध राजा हो गये हैं। इनमे पहले तीन विशेष प्रसिद्ध थे। चन्द्रगुप्त इस वंशका पहला राजा था। पहले वह बिहारका एक छोटासा राजा था, परन्तु कुछ ही दिनोमें उसने अपना राज्य तिरहुतसे अवध तक फैला लिया। उसने अपने राज्यकी यादगारके लिए गुप्त संवत् चलाया था, जिसका आरम्भ सन् ३२० ई० से हुआ।

चन्द्रगुप्तके मरने पर समुद्रगुप्त राजा हुआ। यह बड़ा प्रतापी था। इसने भारतके सभी उत्तरी राज्योंको जीत कर, उड़ीसा और दक्खिनके भी ग्यारह राज्योको अपने अधिकारमे कर लिया। इसे बहुत धन भी हाथ लगा। यह हिन्दू धर्मको मानने वाला था। इसने चक्रवर्ती राजा होनेके लिए अश्वमेध यज्ञ किया था यह वीर और विद्वान् दोनों ही था। पाटलीपुत्र इसकी राजधानी थी।

समुद्र गुप्तके मरने पर उसका पुत्र द्वितीय चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठा। यह बड़ा प्रतापी हुआ। इसने अपने बाहुबलसे मालवा-राज्य स्थापित किया।

महान् पण्डित नागार्जुन उनकी सभाके सभासद थे। कनिष्कने शकाब्द नामका संवत् चलाया जो आज तक इस देशमे प्रचलित है। इसका आरम्भ ईसवी सन् ७८ से हुआ।

गुप्त वंश

गुप्त वंशवालोंने ३०८ ई० से राज्य करना आरम्भ किया और ३०० वर्ष तक राज्य किया। इस वंशके राजा चन्द्रवंशी क्षत्रिय थे। इस वंशमे चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, द्वितीय चन्द्रगुप्त, कुमार गुप्त, स्कन्द गुप्त, पुरगुप्त, नरसिंह गुप्त आदि प्रसिद्ध राजा हो गये हैं। इनमे पहले तीन विशेष प्रसिद्ध थे। चन्द्रगुप्त इस वंशका पहला राजा था। पहले वह बिहारका एक छोटासा राजा था, परन्तु कुछ ही दिनोंमें उसने अपना राज्य तिरहुतसे अवध तक फैला लिया। उसने अपने राज्यकी यादगारके लिए गुप्त संवत् चलाया था, जिसका आरम्भ सन् ३२० ई० से हुआ।

चन्द्रगुप्तके मरने पर समुद्रगुप्त राजा हुआ। यह बड़ा प्रतापी था। इसने भारतके सभी उत्तरी राज्योंको जीत कर, उड़ीसा और दक्खिनके भी ग्यारह राज्योंको अपने अधिकारमे कर लिया। इसे बहुत धन भी हाथ लगा यह हिन्दू धर्मको मानने वाला था। इसने चक्रवर्ती राजा होनेके लिए अश्वमेध यज्ञ किया था वह वीर और विद्वान दोनों ही था पाटलीपुत्र इसकी राजधानी थी।

समुद्र गुप्तके मरने पर उसका पुत्र द्वितीय चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठा। यह बड़ा प्रतापी हुआ। इसने अपने बाहुबलसे मालवा-राज्य स्थापित किया।

मालवाका राज्य

मगधकी गद्दीपर बैठते ही द्वितीय चन्द्रगुप्तने विक्रमादित्यकी पदवी धारण की और बादको इसी नामसे विख्यात हुआ। यह बड़ा प्रतापी राजा था। इसने पञ्जाब, बंगाल, गुजरात और मालवाको जीतकर अपने राज्यमें मिलाया और उज्जैन नगरको राजधानी बनाया। यह हिन्दू धर्मको माननेवाला था। विद्वानोंका खूब आदर करता और गुणग्राही था। इसकी सभामें नव पण्डित प्रधान थे, जो नवरत्नके नामसे मशहूर थे। उनमें महाकवि कालिदास भी एक थे। कालिदासके बनाये रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत, शकुन्तला आदि बड़े उत्तम ग्रन्थ हैं। फाहियान नामका चीनी विद्वान् इसीके जमानेमें हिन्दुस्तानमें आया था। उसने उस समयके हिन्दुस्तानकी बहुत प्रशंसा लिखी है।

इसी मालवामें यशोधर्म देव नामके भी एक प्रसिद्ध राजा हो गये हैं। इन्होंने हूण और शक जातियोंको युद्धमें हराया था। इनकी पदवी भी विक्रमादित्यकी थी। ये भी विद्वान और विद्वानोंका सम्मान करने वाले थे। ये शकारि नामसे भी प्रसिद्ध थे। इन्होंने विक्रम संवत् चलाया था, जो आज तक चला आता है। किन्तु इस विषयमें मतभेद है और अभी तक यह निश्चय नहीं हो पाया है कि [illegible] कौन है यशोधर्म अथवा द्वितीय चन्द्रगुप्त।

थानेश्वर

[illegible] नामके एक बड़े प्रतापी राजा थे। ये शिलादित्यके [illegible] सिंहासन पर बैठे। कन्नौजको

अपनी राजधानी बनाया। उन्होने मगधको जीतकर अपने राज्यमें मिलाया और थोड़े ही दिनोमे समस्त उत्तर भारतके स्वामी हो गये। हर्षवर्द्धन स्वयं विद्वान् थे और विद्वानोंका बड़ा आदर करते थे। नालन्द विश्वविद्यालय उनके समयमे भी उसी प्रकार ऊँची दशामे था। उसमे उस समय भी दस हजार विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। कादम्बरीके बनाने वाले बाणभट्ट कवि उन्हींके दरबारमे रहते थे। हर्षके समान दानी राजा संसारमे विरला ही हुआ होगा। वे हर पाँचवे साल प्रयागमे जाते और दीन-दुखी, साधु-संन्यासियोको इतना धन बाँटते, कि अन्तमे उनके पास एक कौड़ी भी न रह जाती और पुराने कपड़े पहन वहाँसे राजधानीको लौट आते थे। ६४८ ई० मे ऐसे दानी राजाका स्वर्गवास हुआ।

हर्षवर्द्धनके समयमे दूसरा चीनी यात्री ह्यूएनसंग ६४० ई० मे हिन्दुस्तानमे आया था। वह पाँच वर्षों तक बौद्ध तीर्थोंमे घूमता रहा और हजारों बौद्ध ग्रन्थोंको अपने देश ले गया। उसने भी हिन्दुस्तानका बहुत कुछ वर्णन अपने ग्रन्थमे किया है जिससे उस समय के भारतका बहुतसा हाल जाना जाता है।

बङ्गाल

बंगालका कोई सिलसिलेवार इतिहास नहीं मिलता। बहुत दिनों तक तो यह मगध राज्यके ही अधीन रहा। पाल वंशी राजाओंने ईसाकी नवीं सदीसे ग्यारहवीं सदी तक यहाँ राज्य किया। इस वंशको गोपाल नामक राजाने कायम किया था। देवपाल और महिपाल नामके दो राजा इस वंशमे सबसे अधिक प्रसिद्ध हुए। महिपाल

मुसलमान-काल

पहला अध्याय

मुहम्मद साहब

मुहम्मद साहबने ही मुसलमान धर्मको चलाया। इनका जन्म ५७० ईसवीमें मक्का शहरमें हुआ। उस समय अरब वालोंमें अनेक ईश्वरोंको मानना, मूर्त्तिपूजा और शराब पीनेका बड़ा प्रचार था। यह बात मुहम्मद साहबको बहुत खटकी। वे ईश्वर एक है— इसका प्रचार और मूर्तिपूजा और शराबका खण्डन करने लगे। मक्कावालोंको यह बात बहुत बुरी लगी। वे उन्हे जानसे मारनेको तैयार हो गये। इस पर मुहम्मद साहब मक्कासे मदीना भाग गये। मदीना वालोने उनके मतका आदर किया। वे उनके धर्ममे शामिल भी हो गये। फिर तो धीरे-धीरे यह तमाम अरबमें फैल गया। मुहम्मद साहब सन ६२२ ई० मे मक्केसे मदीना गये थे, तबसे मुसलमानोंका हिजरी सवत् जारी हुआ। सन ६३२ ई० मे मदीना शहरमें मुहम्मद साहबका देहान्त हुआ उनके मरने पर सौ वर्षके भीतर ही मुसलमानोंने बहुतसे देश जीत लिये।

मुसलमानोंके धर्म और राज्यका विस्तार

मुहम्मद साहबके मरने पर, अबूबकर उमर उसमान और अली नम्बर चार व्यक्ति एक-एक कर मदीनाके राजा हुए। वे खलीफाके

मुहम्मद स

५७० ईसवीमें

ईश्वरोंको मानन

यह बात मुहम्मद

इसका प्रचार

मवालोंको यह

तैयार हो गये।

मदीना वालोंने

भी हो गये।

मुहम्मद

मुसलमान

इसम

माना है

राजा अब्दुल मलिकका गुलाम था। सुबुक्तगीन इसी अल्पगीनका दामाद था। लाहौरके राजा जयपालके साथ उसकी लड़ाई हुई। जयपाल हार गये। सुबुक्तगीनने सिन्ध नदी तकके देशोंको अपने अधीन कर लिया। वह पेशावरमें अपनी एक सेना रख कर गजनी लौट गया। इस तरह मुसलमानोंका हिन्दुस्तानमें आना धीरे-धीरे शुरू हो गया।

सुलतान महमूद

सुल्तान महमूद सुबुक्तगीनका लड़का था। वह पिताके मरने पर ९९७ ई० में सुल्तानकी पदवी धारण कर गजनीका बादशाह हुआ। महमूदने सतरह बार हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। वह हिन्दुओंके प्रसिद्ध मन्दिरोंको तोड़ कर यहांसे बहुतसा धन और जवाहिरात अपने देशको ले गया। उसने अन्तिम बार सोमनाथके प्रसिद्ध मन्दिरको तोड़ा था। सन् १०२४ ई० में उसने इस मन्दिर पर चढ़ाई की। अनेक स्थानोंके हिन्दू राजाओंने दल बल सहित उसे रोका, पर सभी हार गये। मन्दिर पर महमूदने अधिकार कर लिया। वह शिव-मूर्तिको तोड़ कर उसमें भरे हुए हीरे आदि रत्नों को अपने देश ले गया। कुछ दिनों बाद १०३० ई० में उसकी मृत्यु हो गयी।

महमूदके समान तेजस्वी और बलवान राजा उस समय दूसरा न था। उसने प्रजाके सुभीतेके लिये कुएँ सड़कें मसजिदें और सरायें बनवाने तथा विद्या-प्रचारमें भी बहुत रुपये खर्च किये पर एक कामसे उसकी उदारतामें धब्बा लग गया फिरदौसी उसका

राजा अब्दुल मलिकका गुलाम था। सुबुक्तगीन इसी अल्पगीनका दामाद था। लाहौरके राजा जयपालके साथ उसकी लड़ाई हुई। जयपाल हार गये। सुबुक्तगीनने सिन्ध नदी तकके देशोंको अपने अधीन कर लिया। वह पेशावरमें अपनी एक सेना रख कर गज़नी लौट गया। इस तरह मुसलमानोंका हिन्दुस्तानमें आना धीरे-धीरे शुरू हो गया।

सुलतान महमूद

सुल्तान महमूद सुबुक्तगीनका लड़का था। वह पिताके मरने पर ९९७ ई० में सुल्तानकी पदवी धारण कर गज़नीका बादशाह हुआ। महमूदने सतरह बार हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। वह हिन्दुओंके प्रसिद्ध मन्दिरोंको तोड़ कर वहांसे बहुतसा धन और जवाहिरात अपने देशको ले गया। उसने अन्तिम बार सोमनाथके प्रसिद्ध मन्दिरको तोड़ा था। सन् १०२५ ई० में उसने इस मन्दिर पर चढ़ाई की। अनेक स्थानोंके हिन्दू राजाओंने दल बल सहित उसे रोका, पर सभी हार गये। मन्दिर पर महमूदने अधिकार कर लिया। वह शिव-मूर्तिको तोड़ कर उसमें भरे हुए हीरे आदि रत्नों को अपने देश ले गया। कुछ दिन बाद १०३० ई० में उसकी मृत्यु हो गयी।

महमूदके समान ताकतवर और धनवान राजा उस समय दूसरा न था। उसने ग़ज़नी सजानेके लिये बहुत सुन्दर मसजिदें और सरायें बनवाने तथा विद्या-प्रचारमें भी बहुत रुपया खर्च किया पर एक बातसे उसकी उदारतामें धब्बा लग गया। फिरदौसी [illegible]

एक दरबारी कवि था। फिरदौसीसे उसने एक काव्य-ग्रन्थ को कहा। हर एक कविताके लिये एक-एक अशर्फी देनेका व किया। कविने शाहनामा लिखा। महमूदने उसे देखा। उसमें की संख्या साठ हजार थी। अब वह अशर्फीके बदले चाँदीका देने लगा। किन्तु फिरदौसीने नहीं लिया और दरबारसे चला कुछ दिनोंके बाद महमूदके मनमें पछतावा हुआ। उसने कवि पर साठ हजार अशर्फियोंके सिवा कुछ और अशर्फियाँ परन्तु उस समय वह इस संसारसे चल बसा था।

मुहम्मद गोरी

मुहम्मद गोरी गोर देशके सरदार गयासुद्दीनका भाई था। कन्नौजके राजा जयचन्दके बुलानेसे भारतवर्षमें आया। उस दिल्लीके राजा महाराज पृथ्वीराज थे। जयचन्द और मनमुटाव हो गया था। यही कारण है कि जयचन्दने मुहम्मद को यहाँ चढ़ाई करनेके लिये बुलाया। किन्तु पृथ्वीराज बड़े वीर और तेजस्वी राजा थे। बाण-विद्यामें बड़े ही निपुण थे। बेधी बाण चलाते और इनका निशाना अचूक होता था। गोरी और पृथ्वीराजके बीच युद्ध हुआ। गोरी हार गया। पर दू बार थानेश्वरकी लडाईमे पृथ्वीराजको हारना पड़ा। पृथ्वीराज गये। गोरीने जयचन्दको भी मार डाला और कन्नौज पर कर लिया।

मुहम्मद गोरीका एक गुलाम था। उसका नाम था कुतुबुद्दीन। उनका सेनापति भी था। मुहम्मद गोरी कुतुबुद्दीनको भारतका

(२) खलीफा कौन थे ? किस समय किसके द्वारा हिन्दुस्ता
मुसलमान राज्यका आरम्भ हुआ ?

(३) शिया और सुन्नीके बारेमें क्या जानते हो ? मुसलमान ता
क्यों और कब रखने लगे ?

(४) सुलतान महमूद कौन था ? उसने कितनी बार भारत पर
की ? उसकी अन्तिम चढ़ाईका वर्णन करो। फिरदौसीके
में क्या जानते हो ?

(५) मुहम्मदगोरी कौन था ? वह किस तरह इस देशमें आया
उसके आनेका फल क्या हुआ ? वह किसको भारतका
सौंप कर अपने देशको लौटा ?

दूसरा अध्याय

पठान राज्य

गुलाम वंश (१२०६-१२९०)

कुतुबुद्दीन (१२०६-१२१०-)

कुतुबुद्दीन गुलाम था। इसलिये उसके वंशका नाम गु
वंश पड़ा। मुहम्मद गोरीके मरनेपर वह १२०६ ई० में दिल्ल
गद्दीपर बैठा। उसके पहले जितने मुसलमान आये, सब यह

ऐश व आराममें बिताता था। जलालुद्दीन खिलजी इसका मन्त्री था। वह इसे मारकर सिंहासनपर जा बैठा। इस तरह सन् १२९० ई० गुलाम वंश लोप हो गया।

प्रश्न

(१) भारतवर्षके पहले मुसलमान राजाका नाम बताओ। उसके वंशका नाम गुलाम वंश क्यों पड़ा? इस वंशके कितने राजाओंने दिल्लीपर राज्य किया? हरएकका नाम और शासन-काल बताओ।

(२) सिद्ध करो कि नासिरुद्दीन सच्चा राजा था। उसने कितने वर्ष राज्य किया?

(३) गुलाम वंशका आखिरी राजा कौन था? उसके चाल चलनका वर्णन करो। किस सन्में किसके द्वारा इस वंशका नाश हुआ?

तीसरा अध्याय

खिलजी वंश (१२९०—१३२०)

जलालुद्दीन (१२९०-१२९५)

जलालुद्दीन बड़ा [illegible] वह अपराधियोंको कभी दण्ड नहीं देता था। अपराधियोंने उसकी [illegible] उसकी दया और क्षमाका फल अच्छा नहीं हुआ। कुछ [illegible] इसके तरह-तरहके उपद्रव होने लगे। [illegible]

मेवाड़की राजधानी चित्तौड़को नष्ट कर डाला। चित्तौड़के राजा भीमसिंहकी स्त्री पद्मिनी बहुत सुन्दर थी। अलाउद्दीनने उससे शादी करना चाहा। उसने भीमसिंहके पास कहला भेजा, कि वह पद्मिनीको देखना चाहता है। किन्तु राजा भीमने इसपर ध्यान न दिया। उसने दुबारा कहला भेजा, कि वह पद्मिनीकी सिर्फ छायाको ही दर्पणमें देखना चाहता है। भीमने इसको स्वीकार कर लिया। पद्मनीकी छाया दिखलाई गयी। अलाउद्दीन अपने खेमेमें लौट गया। भीमसिंह उससे मिलने गये, उसने उन्हें कैद कर लिया। बोला,—जब तक पद्मिनी मुझको न दी जायगी, मैं भीमसिंहको नहीं छोड़ सकता।

रानी पद्मिनी सात सौ सखियोंके साथ पालकीमें गयी। वे सात सौ सखियाँ नहीं, बल्कि स्त्रीके वेशमें राजपूत वीर थे। वे वीर अलाउद्दीनकी सेनाको तहस-नहस करके भीमसिंहको छुड़ा लाये। इसके बाद फिर दोनों दलोंमें युद्ध हुआ। राजपूतोंकी हार हुई। भीमसिंह मारे गये और पद्मिनी बहुतसी राजपूत स्त्रियोंके साथ आगमें जल कर सती हो गयी।

मुबारक (१३१६-१३२०)

अलाउद्दीनके मरनेपर उसका तीसरा लड़का मुबारक गद्दीपर बैठा। उसने पाँच वर्ष तक राज्य किया। वह बहुत ही निर्दय और विलासी था। उसका मन्त्री खुसरू उसे मारकर राज-सिंहासनपर बैठा। लेकिन थोड़े ही दिनों बाद गयासुद्दीन तुगलकने खुसरूको भी मार डाला और आप राजा हुआ।

फारस जीतनेकी हुई। उसने बहुत बड़ी सेना इकट्ठी की। सिपाहियोंका वेतन चुका न सका। इससे वे बागी हो गये और देश भरमें लूट-पाट करना शुरू कर दिया। इससे प्रजाको बड़ा कष्ट हुआ। दूसरी बार उसने चीन देशको जीतनेके लिये लाखों सिपाहियोंकी एक बहुत बड़ी सेना भेजी। वह चीनियोंके आगे लड़ न सकी। भाग चली। शत्रुओंके आक्रमण और रास्तेके कष्टसे प्रायः सभी सिपाही राहने ही स्वाहा हो गये॥

उसके इस प्रकारके अविचारके कामोंसे राज्यका खजाना खाली हो गया। यह देख मुहम्मदने चाँदीके सिक्केके बदले तांबेका सिक्का चलाया। प्रजा पर तरह-तरहके टैक्स लगाये गये। जमीनकी मालगुजारी बढ़ा दी गयी। प्रजा कर न दे सकनेके कारण भागने लगी। खेती और व्यापार बन्द हो गये। इसपर बादशाह क्रोधित हो जङ्गली पशुओंके समान प्रजाओंका बध करने लगा। देशको अकाल और महामारीने घेर लिया। देश एक बारगी नष्ट हो गया।

तीसरी बार उसने अपनी राजधानी दिल्ली छोड़ दक्षिणके देवगिरि में बनायी। उसका नाम दौलताबाद रखा। दिल्ली वालोंको देवगिरि जानेका हुक्म हुआ। वे वहाँ जा बसे। किन्तु थोड़े ही दिन बाद उनको फिर दिल्ली लौट आनेकी आज्ञा मिली। दिल्ली दुबारा राजधानी बनायी गयी। इस तरह उसने प्रजाके-जान माल दोनों ही को धूलमें मिला दिया। प्रजा अधिक कष्ट न सह सकी। [illegible] हो गयी। बंगाल विजयनगर और तेलङ्गाना स्वतन्त्र हो गये। दक्षिणमें बाहमनी नामका एक नया स्वतन्त्र राज्य कायम हो गया।

पाँचवाँ अध्याय

लोदी वंश (१४५१-१५२६)

तैमूरके चले जाने पर मुहम्मदशाह दिल्ली लौट आया और
ई० तक राज्य करता रहा अन्तमे खिजिर खॉ दिल्लीका
हुआ। यह सैयद वंशका था। सैयद वंशी राजा छत्तीस व
दिल्ली पर बादशाहत करते रहे। ये सब भी दिल्ली और उसके
पासके ही राजा बने रहे।

इसके बाद दिल्लीका सिंहासन बहलोल लोदीके हाथमे
बहलोल शक्तिशाली राजा था। उसने ३८ वर्ष तक राज्य कि
लोदी वंशके तीन राजाओंने दिल्लीमे राज्य किया। इब्राहीम
अन्तिम बादशाह हुआ। वह बडा अत्याचारी था। उसके अत्याच
से प्रजाके मुखिया बागी हो गये। उन्होने काबुलके राजा
बुलाया। बाबर हिन्दुस्तानमे आया। १५२६ ई० मे
मैदानमे इब्राहीमसे घमासान युद्ध हुआ। इब्राहीम हार गया
बाबर दिल्लीका बादशाह बना। इसी समयसे पठान वंशका लोप हु
और मुगल वंशकी नींव पड़ी।

प्रश्न

१—तुगलक वंशके बाद दिल्ली पर किस वंशका राज्य हुआ

२—बहलोल लोदी कौन था, उसने कब तक राज्य किया

३—पानीपतकी पहली लड़ाई कब और किसके बीच हुई

रामानुज

ये बहुत बड़े विष्णु भक्त थे। इनका जन्म ईसाकी बारहवीं सदी में दक्षिण प्रदेशमें हुआ था। दक्षिणमें उस समय जैन मत बड़े जोरों पर था। इन्होंने वहाँ वैष्णव धर्मका प्रचार किया।

रामानन्द

रामानन्द विष्णुके परम भक्त थे। ये नर्मदाके किनारेके स्थानोंमें रहा करते थे। इन्होंने रामका गुण गा-गा कर वैष्णव धर्मका प्रचार किया। इनके चेले रामानन्दी कहलाते हैं। ये छोटी जातिके लोगों को भी उपदेश देते थे।

कबीर

रामानन्दके चेलोंमें कबीर सबसे प्रधान थे। पन्द्रहवीं सदीके आरम्भमें इनका जन्म हुआ। ये जातिके जुलाहा थे। रामानन्द केवल हिन्दुओंको ही धर्मका उपदेश देते थे, परन्तु कबीर हिन्दू और मुसलमान दोनोंको। इनका कहना था, कि विष्णु और अल्लाह, राम और रहीम एक ही हैं। कबीरके बनाये दोहे बड़े उपदेशप्रद हैं।

कबीर

कहते हैं, कि जब ये मरे, तब इनकी लाशको हिन्दू चेलोंने जलाना और मुसलमानोंने दफनाना चाहा। इसके लिये चेलोंमे बड़ा झगड़ा पैदा हुआ, परन्तु थोड़ी ही देर बाद देखा गया, तो वह लाश ही गायब थी! तब सभीके मनमे ज्ञान पैदा हो गया। इनके चेले कबीर पन्थी कहलाते हैं।

नानक

गुरु नानकने सिक्ख धर्मको चलाया, जो आजकल वर्तमान है।

नानक

१४६९ ई० में लाहौरमे इन्होने जन्म लिया था। इनके पिताका नाम

कालू और माताका त्रिपता था। नानक जातिके क्षत्रिय थे। ये एक ईश्वरको मानने वाले थे। सबमें भाई-भाईका भाव कायम करना सर्वत्र शांति फैलाना और सबको सच्चे धर्म-मार्ग पर चलाना ही सिक्ख धर्मका सार था। ये हिन्दुओंके अवतारोंको मानते और मुहम्मदको ईश्वरका दूत समझते थे। कबीरके भाँति इनके भी अनेक मुसलमान शिष्य थे। इनके शिष्य नानक पंथी कहलाये। १५३९ ई० में इनकी मृत्यु हुई।

प्रश्न

१—चैतन्यका जन्म कब हुआ था? उनका मत क्या था?

२—रामानन्दी और कबीर पन्थी मतोंमें क्या अन्तर है?

३—नानकके बारेमें क्या जानते हो?

मुगलवंश

पहला अध्याय

बाबर (१५२६—१५३०)

बाबर

बाबर मुगल वंशका पहला बादशाह हुआ। यह बड़ा वीर और बुद्धिमान बादशाह था। हिन्दुस्तानमें अपना राज्य कायम करनेमें उसे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा था। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही से लड़ना पड़ा आगरेके पास फतहपुर सीकरीमें मेवाड़के राणा सग्रामसिंहसे बड़ा भयानक युद्ध हुआ। पहली बार तो बाबर हार गया परन्तु इससे वह हताश न हुआ। उसने अपने सिपाहियोंको समझाना शुरू किया कहा — भाइयो, हम सभी एक दिन मरेंगे, फिर मरनेमें डर क्या ? डट जाओ और मैदान मार लो या जान दे दो। ये दो ही बातें वीरोंको शोभा देती हैं।" सिपाहियोंमें नया जोश भर गया। वे बड़ी वीरतासे लड़ने लगे। इस बार सग्रामसिंहकी सेनाके पाँव उखड़ गये। बाबर

हुमायूं भाग कर फारस गया। इतनेमे शेरशाह मर गया। उसके उत्तराधिकारी बिलकुल कमजोर थे। इसलिये हुमायूंको फिर दिल्ली लेनेका मौका मिला। १५५५ ई० मे उसने चढ़ाई कर दी। दिल्लीके बादशाह सिकन्दर सूरने सरहिन्दमें उसका सामना किया। वह हार गया और दिल्ली तथा आगरा हुमायूंके हाथ आये। हुमायूंको कभी भी सुख न मिला। उसका तमाम जीवन दुःखमें ही बीता। एक दिन सन्ध्या समय नमाज पढ़नेके लिये वह छत पर चढ़ रहा था, सीढ़ीसे पैर फिसल गया और उसकी मृत्यु हो गयी।

दूसरा अध्याय

अकबर (१५५६—१६०५)

जन्म और बाल्यकाल

हुमायूं शेरशाहसे हराया जाकर अमरकोटके रास्तेमे था, तभी अर्थात् २३ नवम्बर सन् १५४२ ई० को अकबर पैदा हुआ। उस समय हुमायूं बिलकुल कङ्गाल था। कौड़ी भी पासमें न थी किन्तु वह पुत्र पैदा होनेकी खुशीको रोक न सका। उसके पास थोड़ीसी कस्तूरी थी। उसने उसे ही अपने अनुयायियोंको बांट सबको यह कहकर आशीर्वाद दिया, कि ईश्वर करे बालक इस भी कस्तूरीकी सुगन्धिके समान संसारमें फैले।

अकबर बचपनमें चार बरस तक अपने चचाके पास हिरातमें रहा। इसके बाद वह अपने दूसरे चचाके पास कन्दहारमें ला रहे

साल तक रहा। अन्तमें सन् १५५३ ई० में काबुल हुमायूंके हाथ आया। अकबरको सब तरहकी शिक्षा मिलने लगी। बालकपनमें ही

अकबर

अकबरने अपने पिताके साथ गजनीके घेरेमें बड़ी बहादु दिखलायी थी।

हुमायूंके मरने पर पठान बादशाह आदिलशाहके सेनापति हे दिल्ली और आगराको अपने कब्जेमें करके, महाराज विक्रमादित्य

पहले आगरा पर ले ली थी। उस समय अकबर पंजाबमें था। हेमूने दिल्लीको भी ले लिया था। सन् १५५६ ई० में पानीपतके मैदानमें दोनोंका सामना हुआ। हेमू हार गया और मारा गया। दिल्ली और आगरा अकबरके हाथ लगे।

चौदह वर्षकी उम्रमें अकबर दिल्लीका बादशाह हुआ। हुमायूंका विश्वासी सेनापति बैरामखाँ अकबरका मन्त्री हुआ। राज्यका सब काम वही करता था। परन्तु बैराम बड़ा ही निठुर स्वभावका था। उसने अकबरके कितने ही उमरावोंको जानसे मरवा डाला। इससे अकबरके मनमें बड़ा दुःख हुआ। उसने चतुराईसे राज्यका भार, उसके हाथसे निकाल, स्वयं ले लिया। बैराम बागी हुआ, परन्तु उसे हारना पड़ा। अकबरने क्षमा करके उसे मक्का भेज दिया। बैराम के किसी शत्रुने उसे रास्तेमें ही मार डाला।

राजपूतोंसे मित्रता

अकबरने दो राजपूत कन्याओंसे शादी की और अपने पुत्र सलीमकी भी शादी एक राजपूत कन्यासे कर दी। इस तरह उसने सभी राजपूत राजाओंको वशमें कर लिया। एक मेवाड़के राणा प्रतापसिंह उसके वशमें नहीं हुए उनको वशमें करनेके लिये अकबरने बहुत बड़ी सेना ले मेवाड़की राजधानी चित्तौड़ पर चढ़ाई की। ८००० राजपूत वीर बड़ी वीरतासे चित्तौड़की रक्षा करने लगे। अन्तमें राजपूत सेनापति वीरवर जयमल युद्धमें मारा गया। १५६८ ई० मे चित्तौड़ पर मुसलमानोंका अधिकार हुआ। राणा प्रताप उदयपुर चले गये। उदयपुर को उनके पिता उदयसिंहने बसाया था।

अकबरने दुबारा प्रताप पर चढ़ाई की। हल्दीघाटी घमासान युद्ध हुआ। इस बार भी मुगलोंकी ही जीत हुई। किन्तु फिर भी प्रतापने अकबरकी अधीनता स्वीकार न की। राजपूतोंके लगभग सभी राजाओंने अकबर के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। सभी उसके वशमें हो गये थे। परन्तु एक राणा प्रताप ही थे, जिन्होंने प्रण कर लिया था, कि प्राण रहते अपनी बेटी कभी मुगलोंको न देंगे और न उनके अधीन रहेंगे। उन्होंने अन्त तक इसको निबाहा।

राणा प्रतापसिंह

राजपूत राजाओं और चतुर हिन्दू कर्मचारियोंकी मददसे अकबरने अपने राज्यको खूब बढ़ाया। पञ्जाबसे बिहार तक और बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, काश्मीर और सिन्ध प्रदेश उसके अधीन हो गये। हिन्दुस्तानके दक्षिणी हिस्सेको जीतनेमें उसे बड़ी कठिनाई झेलनी पड़ी थी। अहमदनगरकी प्रसिद्ध रानी चाँद सुल्तानाने बार-बार उसकी सेनाको हराया। वह स्वयं हथियार लेकर लड़ने जाती थी उसके साहस और वीरतासे मुगल सेना भाग खड़ी होती। अन्तमें चाँद बीबी एक विश्वासघाती द्वारा मारी गयी। अहमदनगर बिना मालिक का हो गया। मौका पाकर मुगलोंने अहमदनगर पर अधिकार कर लिया। गोलकुण्डा और बीजापुर भी अकबरके अधीन हो गये।

अकबरका अन्तिम काल

अकबरके जीवनके अन्तिम समयमे उसके बड़े लड़के सलीमने बागी होकर उसे बड़ी तकलीफ दी। अकबरने उसे बङ्गाल और उड़ीसाकी सूबेदारी देकर शान्त किया। उसके दो पुत्र और थे, मुराद और दानियाल। ये दोनो ही बहुत शराबी थे। इसलिये अकालमे ही मर गये। इन सब कष्टोंके मारे अकबरकी तन्दुरुस्ती खराब हो गयी। वह दिल्लीका राज्य सलीमको सौंप कर ६३ वर्षकी उम्रमे १६०५ ई० में परलोक सिधारा।

अकबरका चरित्र

अकबर मुसलमान बादशाहोंमे सबसे बढ़कर था। वह निष्कपट, मधुर बोलने वाला, दानी, काममे चतुर और बड़ा गुणग्राही था। वह किसीके धर्ममें बाधा नहीं डालता था, हिन्दुओंको बड़े-बड़े ओहदे देकर उनको अपना लिया था। वह शत्रुके साथ दयाका व्यवहार करता था। मुसलमानोंके सिवा दूसरे धर्म वालो पर जो जजिया कर लगता था, उसे उसने उठा दिया। यात्रियोंको भी एक तरहका कर देना होता था, वह भी माफ कर दिया। इन सब बातोंसे सिद्ध होता है, कि अकबर एक आदर्श राजा था। यद्यपि वह मुसलमान था, परन्तु उसके गुणोंके कारण हिन्दू उसे "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" कह कर मानते थे।

अकबरका राज्य प्रबन्ध

अकबरने अपने राज्यको पन्द्रह सूबोंमे बाँटा था। हर एक सूबा एक सूबेदारकी देखभालमे था और वहाँकी मालगुजारी वसूल

करनेके लिये एक दीवान रहता था। शान्ति बनाये रखनेके लिये हर शहरमें एक कोतवाल रहता था। काजी मुकद्दमोंकी देखभाल करके न्याय किया करता था। सेनापतियोंको तनख्वाहके बदले जागीर वा जमीन दी जाती थी। उसी जमीनकी आमदनीसे वे अपने अधीनके सिपाहियोंका भी वेतन चुकाते थे। परन्तु बादमें अकबरने इस प्रथाको उठा दिया और सबको वेतन देने लगा। प्रजाओंको मालगुजारीके रूपमें अपनी जमीनका तीसरा हिस्सा राजाको देना पड़ा।

अकबरके सभासद गण

(१) टोडरमल अकबरके मन्त्री थे। इन्होने राज्य भरकी पैमाइश कर डाली थी और उस पर लगान लगाया था। ये हिन्दू थे। अकबरके ४१६ मनसबदार थे, जिनमें ५१ हिन्दू भी थे। (२) अबुलफजल बहुत बड़े विद्वान् पुरुष थे। इन्होंने अकबरके जमानेकी सब बातें इतिहासके रूपमें लिखी हैं। इस पुस्तकका नाम 'आईने अकबरी है'। (३) 'फैजी' अच्छे कवि और संस्कृतके भी पण्डित थे। उन्होने बहुतसे संस्कृत ग्रन्थोंका उल्था फारसीमें किया। (४) तानसेनके समान कोई दूसरा गवैया न हुआ। (५) मानसिंह सेनापति और सूबेदार थे। (६) बीरबल भट्ट जातिके ब्राह्मण थे। ये बड़े ही रसिक और अच्छे कवि भी थे। (७) अब्दुलकादिर बदायूनी भी संस्कृत भाषाके प्रगाढ़ पण्डित थे। महाभारतके कई पर्व्वोंका अनुवाद इन्होने फारसी भाषामें किया है।

———

करते थी। इसी समय पुर्तगीज़ व्यापारियोंने इस देशमें तम्बाकू लाना आरम्भ किया था।

जहांगीरने २२ वर्ष तक राज्य किया। उसके समयमें मुगल साम्राज्यकी कोई उन्नति नहीं हुई। दक्षिणके राज्य और राजपूत भी स्वाधीन हो गये। वह बहुत बड़ा शराबी और निर्दय राजा था।

शाहजहां (१६२७—१६५८)

शाहजहां दिल्लीका पाँचवाँ मुगल बादशाह हुआ। इसका पहला नाम खुर्रम था। उदयपुरके राणाको हरानेपर जहांगीरने इसे शाहजहा (अर्थात् संसारका राजा) की पदवी दी। बादशाह होनेपर इसने नूरजहा को बहुत सा वेतन देकर राज्यके कामोंसे अलग कर दिया और शहरयार और अकबरकी सन्तानको

...ाफ किया।

...ठ प... ...मे इसका सेनापति खां जहा ... के साथ जा मिला। लगातार ... फिरसे इसके अधीन हुआ।

बंगालमें पुर्तगीज बहुत दिनोंसे अत्याचार करते आते थे, शाह-जहाने उन्हें हुगलीसे निकल जानेकी आज्ञा दी और पुर्तगीजोंको निकल जाना पड़ा।

१६५८ ई० में शाहजहां बहुत बीमार पड़ा। उसके चार लड़के थे। बड़ा दारा था। वह विद्वान और गुणज्ञ था और राज-काजमें भी भाग लिया करता था। दूसरा शुजा बंगालका, तीसरा औरङ्गजेब दक्षिणका और चौथा मुराद गुजरातका सूबेदार था। औरङ्गजेब सब भाइयोंको मार कर और पिताको कैद कर, आलमगीरके नामसे सिहासनपर बैठा। शाहजहा आठ बरस तक कैदखानेमें रहकर सन १६६६ ई० में मरा।

मुमताज बेगम

शाहजहाके प्रशंसनीय कार्य

शाहजहाने ६ करोड़ रुपये खर्च करके मोरतख्त नामक सिहा-सन बनवाया था। अपनी प्यारी बेगम मुमताजमहलके मरनेपर संग-

औरङ्गजेब (१६५८—१७०७)

औरङ्गजेब सन् १६५८ ई० की २६ वीं मईको आलमगीरकी पदवी लेकर सिंहासन पर बैठा। इसने बडी निर्दयताके साथ अपने भाइयोंको मारकर अपना राज्य निष्कण्टक कर लिया।

इसके जमानेमे बङ्गालमे दो बड़े मशहूर सूबेदार थे, मीर जुमला और शाइस्ताखाँ। मीर जुमलाने आसामको और शाइस्ताने चटगाँवको मुगल साम्राज्यके अधीन बना रक्खा था। शाइस्ताखाँके अच्छे इन्तजामके कारण उस समय बङ्गालमे रुपयेका आठ मन चावल बिकता था।

औरङ्गजेब

औरङ्गजेब कट्टर मुसलमान था। जिस जजिया करको अकबरने उठा दिया था, इसने उसे हिन्दुओंपर फिर लगाया। इससे हिन्दुओंके दिमाग फिर गये। राजपूत बागी हो उठे। कितने ही साधु-सन्तोंने उसके विरुद्ध हथियार उठा लिया। इस प्रकार तमाम हिन्दू उसके विरुद्ध हो गये, जिनको दबानेमे उसके शासन समयके पचीस बरस खर्च हो गये। बाकी पचीस वर्ष दक्षिणकी बगावतको दबानेमे लगे।

महाराष्ट्र देशमें महाराज शिवाजीने स्वतन्त्र राज्य कायम किया। शिवाजीको अपने अधीन करनेकी औरङ्गजेबने बड़ी चेष्टा की, पर किसी तरह भी सफल न हो सका। अन्तमें शिवाजीके साथ सन्धि करनी पड़ी।

सन्धिके बाद महाराज शिवाजी जब उससे मिलने दिल्ली आये, तब धोखेसे उसने उन्हें कैद कर लिया। परन्तु अधिक काल तक कैदमें न रख सका। शिवाजीने एक दिन ब्राह्मणोंको टोकरी-टोकरी मिठाई बाँटनी शुरू की। इसी समय वे स्वयं टोकरीमें बैठकर बाहर निकल आये। शिवाजी अब और भी क्रोधित हुए। वे अवसर पाकर उनपर चढ़ाई करने लगे और बड़ा ही कष्ट पहुँचाया। औरङ्गजेबने महाराष्ट्रपर अधिकार करनेकी बहुत कोशिश की, पर वह उसके हाथ न लगा। सिर्फ गोलकुण्डा और विजयनगरके दो राज्योंको वह अपने कब्जेमें कर सका। १७०७ ई० में औरङ्गजेबकी मृत्यु हुई।

औरङ्गजेबका चरित्र

औरङ्गजेब साहसी और वीर पुरुष था। वह कठिनाइयोंसे कभी भागता न था। इसलाम धर्ममें उसकी बड़ी भक्ति थी। हिन्दुओंसे द्रोह और शत्रुता रखता था। इसलिये उसने उनपर फिरसे जजिया कर जारी किया था। जिसके कारण हिन्दू सदा उससे अप्रसन्न रहते और देशमें अशान्ति थी। वह बुद्धिमान था परन्तु धूर्त और कपटी था। वह किसीका विश्वास नहीं करता था। इन्हीं सब कारणोंने मुगल राज्यकी नींव हिला डाली। औरङ्गजेब शिल्पकारीमें बड़ा निपुण था और कभी शराब नहीं पीता था।

महाराजकी पदवी धारण की और बड़ी धूम-धामसे रायगढ़के सिंहा-सन पर बैठे। औरङ्गजेबने भी इनकी स्वाधीनताको स्वीकार किया। शिवाजीकी विचित्र बुद्धिमानीके बदले दक्षिणमें एक हिन्दू राज्य स्थापित हो गया। १६८० ई० में इनकी मृत्यु हुई।

महाराज शिवाजी कट्टर हिन्दू थे। दूसरे धर्मोंसे भी इन्हें कोई द्वेष न था। वे बड़े ही उदार और ज्ञानी पुरुष थे। किसीको बेमतलब सताने अथवा बुरे आचरणसे कोसों दूर भागते थे। राज्यके खजाने से एक पैसा भी अपने काममें न लाते और बड़े कायदेसे राज्यका शासन करते थे। इनके राज्यमें किसान, गौ, ब्राह्मण और स्त्रियों पर कोई अत्याचार करने नहीं पाता था।

शिवाजीके मरनेके बाद मराठा जातिकी अवस्था

शिवाजीके मरनेके बाद औरङ्गजेबने इनके पुत्र सम्भूजीको मरवा डाला और सम्भूजीके छ वर्षके लड़के द्वितीय शिवाजी-को कैद कर लिया। औरङ्गजेब इसे साहु कहा करता और [illegible] न करके प्यार करता था। इसके मरने पर साहु कैदसे छूटे।

इधर शिवाजीके दूसरे पुत्र [illegible]

सहायतासे ताराबाईसे लडने लगे। साहु आलसी और आचरणके हीन थे। उनको राज्यका काम भारी मालूम होने लगा। इसलिये बालाजी विश्वनाथको पेशवाकी पदवी देकर राज्यका भार सौंप दिया। अब बालाजी और उनके वंशवाले मराठा जातिके नेता बने।

बाजीराव

बालाजीके पुत्र बाजीराव बड़े शक्तिशाली पुरुष थे। उन्होंने दिल्ली तक अपने अधिकारमे कर लिया था। उनके पुत्र बालाजी बाजीरावने सितारा छोड पूनाको अपनी राजधानी बनाया। पेशवा बड़े जोर शोरसे राज्य करते थे। अन्तमें पानीपतकी तीसरी लडाईमे इनका बल कम हो गया। सिन्धिया होलकर आदि सेनापति स्वतन्त्र बन बैठे। इस प्रकार महाराष्ट्र प्रदेशमे और भी चार स्वतन्त्र राज्य कायम हो गये।

ग्वालियरमे रणजीतने राज्य स्थापित किया। माधवजी इस वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा थे। इन्दौरमे होलकरोका राज्य हुआ। मल्हारराव होलकरको पतोहू अहल्याबाईने अपने पतिके मरने पर कई वर्षों तक राज्य किया। उन्हींकी वजहसे इन्दौर बहुत बड़ा नगर हो गया। इन्दौर निवासी अहल्याबाईको देवी मानते थे।

दूत भेजा। इन दूतको किन्होंने जलालाबादमें मार डाला। इस पर नादिर क्रोधित हो दिल्ली पर चढ़ आया। पहले तो उसने दिल्ली निवासियों पर कोई अत्याचार नहीं किया; परन्तु एक दिन जब दिल्ली वालोंने नादिरशाहके मरनेकी खबर चारों ओर फैला कर, उसके बहुतसे साथियोंको मार डाला, तब नादिरके क्रोधका ठिकाना न रहा। उसने दिल्लीमें खूनकी धारा बहा दी। बूढ़े, बच्चे, स्त्री, पुरुष सबकी लाशोंसे दिल्लीको पाट दिया। अन्तमें मुहम्मदके बहुत गिड़-गिड़ाने पर वह शान्त हुआ। यहाँसे कोहनूर हीरा, शाहजहाँका मोरतख्त और बहुतसे धन-रत्न लेकर नादिर अपने देशको लौट गया।

अब्दालीकी चढ़ाई और मराठोंका अधःपतन

अहमदशाह अब्दाली नादिरशाहका प्रधान सेनापति था। नादिर के मरने पर, कन्धारको जीत कर वह वहाँका राजा हुआ। १७४८ ई० में उसने बहुत बड़ी सेना लेकर भारतवर्ष पर चढ़ाई की। सर-हिन्द नामक स्थानमें मुगलोंसे मुठभेड़ हुई। इसमें मुगल जीत गये। इसके बाद सन् १७५१ ई० में हिन्दुस्तान पर वह दुबारा चढ़ आया। इस बार उसका सितारा चमका। वह पञ्जाबको जीत कर कन्धार लौट गया। कुछ दिनों बाद फिर दिल्ली पर चढ़ाई की। इस बार उसने दिल्ली पर अधिकार करके खूब लूट-पाट मचाया। दिल्लीका बादशाह उस समय आलमगीर था। उसके प्रार्थना करने पर अहमद-शाह लौट गया। इधर मराठा लोग भारतमें अपना एक छत्र राज्य स्थापन करनेकी कोशिश कर रहे थे। दिल्ली और पञ्जाबको उन्होंने

भारतमें पु

... मनी ...
... जो कुछ दिन ...
... धन और धनवान

... दोगामा

... का एक पोर्तु...
... के किनारे आलो ...
... पोर्तुगीज बडी ...
... और ... गया।

गयी, जिसके कारण भारतमे भी सुलह हुई। परन्तु थोड़े ही दिन बाद इनमें फिर लडाई छिडी।

अङ्गरेज और फ्रांसीसियोंकी दूसरी लड़ाई

डूप्लेकी मददसे चाँद साहब कर्नाटकका नवाब हुआ। इस मुहम्मद अलीने अंगरेजोंसे सहायता माँगी। अंगरेजोंने उसकी मदद के लिये क्लाइवके अधीन सेना भेजी। क्लाइवने चढ़ाई करके कर्नाटककी राजधानी पर कब्जा कर लिया। उस समय चाँद साहब वहाँ नहीं था। यह खबर पाते ही वह आ पहुँचा और सात सप्ताह तक क्लाइव को घेरे रहा। क्लाइव भी बडी वीरता और बुद्धिमानीसे नगरकी रक्षा करता रहा। अन्तमे चाँद साहबकी हार हुई और वह मारा गया। इस घटनाको लेकर दक्षिणमे इन दोनो जातियोंके बीच कई एक लडाइयाँ हुई। कुछ दिनोके बाद क्लाइव विलायत चला गया और सन् १७५५ ई० मे दोनोमे फिर सन्धि हुई।

अङ्गरेज और फ्रांसीसियोंकी तीसरी लड़ाई

यूरोपमे अगरेज और फ्रासीसियोमे जब लडाई छिडती, तब हिन्दुस्तानमे भी ये परस्पर लडने लगते। अबकी फिर यूरोपमे युद्ध जारी हुआ। इसलिये लाली नामके फ्रासीसियोके एक सेनापतिने अगरेजोके मद्रासके किले पर अधिकार कर लिया। अन्तमे कर्नल आयरकूटकी अधीनतामे अगरेजोके कई एक लडाईके जहाज मद्रासमे आ पहुँचे। लाली डरकर भाग गया। आयरकूटने मद्रास पर कब्जा कर लिया। इसके वाद सन् १७६० ई० मे वन्डीवास नामक स्थानमे

आयरकूटने लालीको हराया। फिर १७६१ ई० में उसने पांडीचेरीमें लाली पर चढ़ाई की। इसमें भी लालीको हारना पड़ा। इस कारण भारतवर्षसे फ्रान्सीसियोंके पाँव उखड़ गये और अंगरेजोंके राज्यकी नींव जमी।

क्लाइवका परिचय

सन् १७२५ ई० इंगलैण्डके श्रपशायर प्रान्तमें राबर्ट क्लाइवका जन्म हुआ। उसके पिताका नाम रिचार्ड क्लाइव था। लड़कपनमें वह अवारा था। पढ़ने-लिखनेमें बिलकुल मन न लगाता था। इसके दुष्ट स्वभावके कारण, पिताने तंग आकर, ईस्ट इण्डिया कम्पनीमें किरानी बना, हिन्दुस्तानमें भेज दिया। यहाँ आने पर क्लाइवकी तन्दुरुस्ती एक बारगी नष्ट हो गयी। उसका मन इस देशमें बिलकुल नहीं लगता था। इसलिये उसने दो-दो बार अपने मस्तकमें गोली मारकर मर जाना चाहा पर उसकी चेष्टा व्यर्थ हुई। इस पर उसने मन-ही मन कहा — 'मालूम नहीं, कि मेरी मृत्यु ईश्वरको क्यों नहीं स्वीकार है। शायद मेरे हाथसे वह कुछ बड़ा कार्य कराना चाहते हैं।' [illegible] बात वही हुई। [illegible] क्लाइव अपने पराक्रम और साहससे [illegible] आदमीसे बढ़कर बहुत बड़ा आदमी हो गया, जिसके [illegible] है।

———

काल कोठरी

बंगालके नवाब सिराजुद्दौलाने राजा राजवल्लभकी सब सम्पत्ति हड़प जानेकी कोशिश की। इसलिये उनके पुत्र कृष्णदासने अपनी सब धन-सम्पत्ति लेकर परिवारके साथ कलकत्तेमें अंगरेजोंकी शरण ली। नवाबने अंगरेजोंके पास कहला भेजा, कि कृष्णदासको मेरे पास भेज दो। परन्तु अंगरेजोंने कुछ ध्यान न दिया। इसके सिवा अंगरेज सिराजुद्दौलाके मना करने पर भी फोर्ट विलियम किलाकी मरम्मत कराने लगे। इन दो कारणोंसे नवाबने अंगरेजोंसे रुष्ट होकर कलकत्ते पर चढ़ाई कर दी। कलकत्तेके शासनकर्त्ता ड्रेक साहब, किलेकी रक्षाके लिये कुछ सिपाही छोड़, भाग गये। नवाबने सहज ही में किले पर अधिकार कर लिया और १४७ अंगरेज सिपाहियोंको एक छोटीसी कोठरीमें बन्द कर दिया। दूसरे दिन दरवाजा खोलने पर गर्मी, प्यास और ठसम-ठसके कारण सिर्फ २३ आदमी जीते निकले, बाकी सब मर गये थे। यह घटना २३ जून सन् १७५६ ई० में हुई थी और 'काली कोठरीकी हत्या' के नामसे प्रसिद्ध हुई।

सिराजुद्दौला

इस दुर्घटनाकी खबर मद्रास पहुँची। वहाँसे कम्पनीने क्लाइव और वाट्सनके साथ बहुत बड़ी सेना भेजी जिसने कलकत्ते पर फिर

लार्ड क्लाइव

२—[illegible] नवाब निजाम[illegible]को [illegible] और इलाहाबाद [illegible] हाथमें दिया । [illegible] सालाना ५३ लाख [illegible] देना निश्चय हुआ ।

३—दिल्लीके बादशाह शाह आलमको सालाना २६ लाख रु० देनेकी शर्तपर, सन १७६५ ई० की १२ अगस्तको कम्पनीको [illegible] बंगाल, बिहार और उड़ीसाकी दीवानी प्राप्त हुई ।

४—सिपाहियोंको लड़ाईके समय या [illegible] मौकेपर भी जो दूनी तनख्वाह दी जाती थी, उसे डबल भत्ता कहते थे । क्लाइवने उसे बन्द कर दिया ।

५—कम्पनीके नौकर कम्पनीके नाममें अपना व्यापार करते थे । क्लाइवने इसे भी बन्द कर दिया और उनकी इस कमीको पूरा करनेके लिये, नमकके व्यापारमें जो लाभ होता था, उसमेंसे ही कुछ देनेका बन्दोबस्त किया ।

इस तरह कम्पनीके कामको सुलझा कर सन १७६७ ई० में वह इङ्गलैंडको लौट गया । वहाँपर कम्पनीके सञ्चालकोंने कई बातोंका उसपर दोष लगाया, जिससे दुःखी होकर आत्म हत्या करके मर गया।

बंगालका राज्य कम्पनी और नवाब दोनोंके हाथमें रहनेके कारण सन् १७७० ई० में बंगालमें बड़े जोरका अकाल पड़ा । उससे बङ्गालके लगभग एक तिहाई आदमी मर गये ।
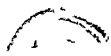
हैदर अली

हैदर अली

हैदरअली पहले मैसूरके राजाका सेनापति था। बादमें वहांके राजाको गद्दीसे उतार कर आप राजा बन गया और अपने राज्यको बढ़ाने लगा। इसलिये हैदरको निजाम, अंग्रेज और मराठोंसे एक साथ ही भिड़ना पड़ा। हैदरने एक चाल चली। उसने निजाम और मराठोंको अपनी ओर मिला लिया और अंग्रेजोंसे लड़ाई ठान दी। इसको ही मैसूरकी पहली लड़ाई कहते हैं। कई जगहमें अंग्रेजोंको हराकर हैदर मद्रास पहुंचा। अंग्रेज डर गए और [illegible] हैदर [illegible]

प्रश्न

१—भारतमें अपना-अपना राज्य कायम करनेके लिये अङ्गरेज औ फ्रांसीसियोंमें जो लड़ाइयाँ हुईं, उनका संक्षेपमें वर्णन करो क्लाइव कौन था ? उसके चरित्रका वर्णन करो।

२—अंगरेज और सिराजुद्दौलाके बीच मन-मुटावका कारण क्या हुआ 'काली कोठरीकी हत्या के बारेमें क्या जानते हो ? पलासीके युद्धका वर्णन करो।

३—सिराजुद्दौलाके बाद बंगालका नवाब कौन हुआ ? उसके गद्दीसे उतारे जानेका कारण बताओ। उसके बाद जो नवाब हुआ वह कैसा आदमी था ?

४—अंगरेजों और मीरकासिमके झगड़ेका कारण बताओ ? किन-किन स्थानोंमें अंगरेजोंके साथ उसकी लड़ाइयाँ हुईं और उनका नतीजा क्या हुआ ?

५—क्लाइवने हिन्दुस्तानमें दुबारा आकर कौन-कौनसे कार्य किये ?

६—बंगालके अकालका कारण क्या था ? हैदरअली कौन था ? मैसूरकी पहली लड़ाईका वर्णन करो।

तीसरा अध्याय

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके अधीन भारतवर्ष

वारनहेस्टिंग्स (१७७२-१७८४)

ये सन् १७७२ ई० में बंगालके गवर्नर हुए। इनके जमानेमें नीचे लिखे कार्य हुए।

वारन हेस्टिंग्स

१—हेस्टिंग्सने बंगालको चौदह जिलोंमें बाँटा और हर एक जिलेकी मालगुजारी वसूल करनेके लिये एक-एक कलक्टर नियुक्त किये। जमींदारोंके साथ पाँच वर्षके लिये मालगुजारीका बन्दोबस्त किया।
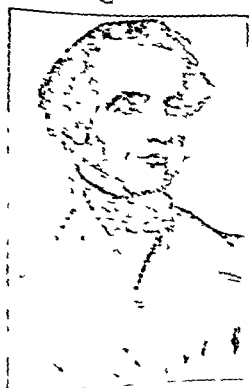
२—प्रजाके मुकदमोंका फैसला करनेके लिये हरएक जिलेमें दीवानी और फौजदारी अदालतें कायम कीं और मुकदमेंके अपीलके लिये कलकत्तेमें सदर निजामत अदालतें भी कायम कीं। इनमें एकमें दीवानी और दूसरीमें फौजदारी मुकदमे देखे जाते।

मारक्विस आफ़ वेलेस्ली (१७९८-१८०५)

वेलेस्लीके समयमें अंगरेजोंको टीपूके साथ फिर लड़ना पड़ा। यह मैसूरकी चौथी लड़ाई कहलायी। टीपूका फ्रांसीसियोंसे मित्रता कर लेना ही इस युद्धका कारण था। इस युद्धमें टीपूकी हार और उसकी मौत हुई। टीपूका नाश करके वेलेस्ली मराठोंको दबानेका उद्योग करने लगे। उन्होंने महाराष्ट्रके तमाम जागीरदारोंको अंगरेजोंसे सन्धि करनेको बुलवाया। किन्तु सिर्फ पेशवाने ही अंगरेजोंकी अधीनता स्वीकार की। यह सन्धि बेसीनमें हुई। दूसरे जागीरदारोंने सन् १८०३ ई० में लड़ाई छेड़ी जो मराठोंकी दूसरी लड़ाई कहलाती है। अन्तमें मराठोंको हारकर अंगरेजोंकी अधीनता स्वीकार करना पड़ा।

वेलेस्ली

[illegible] भाग [illegible] और [illegible] किया।

लार्ड एलिनबरा

(१८४२-१८४४)

इनके समयमे सन् १८४२ ई० मे काबुलकी दूसरी लड़ाई हुई। न बार अङ्गरेज जीते। गजनीके किलेको धूलमे मिला कर, अङ्ग-जी कैदियोको छुड़ा कर और बलवाइयोको कैद कर अङ्गरेजी सेना न्दुस्तानमे लौट आयी। इनके जमानेमे सिन्ध प्रदेश अङ्गरेजोंके थ आया।

लार्ड हार्डिंज

(१८४४-१८४८)

रणजीतसिंहके मरने पर सिक्खोने अङ्गरेजी राज्य पर हमला या। उनके साथ मुदकी, फिरोजशहर, आलियावाल और सोब्राउ मक स्थानोमे अङ्गरेजोको लडना पड़ा। उस समय अङ्गरेजी फौज प्रधान सेनापति सर ह्यु गफ थे और स्वयं हार्डिंग भी युद्धमे ामिल हुए थे। सिक्खोंके सेनापति तेजसिंह थे। सिक्खोने लड़ाईमे ड़ी वीरता दिखलायी पर अन्तमे हार गये। अङ्गरेजोको लड़ाईके र्चेको पूरा करनेके लिये [illegible] धन तथा [illegible] और विपाशा [illegible]

सर जान लारेन्स

(१८६४-१८६६)

इनके समयमे उड़ीसा और पश्चिमी भारतमे भयानक अकाल पड़ा था। भूटानके राजाने वहुत सी अंगरेज प्रजाको जवरदस्ती पकड़-पकड़कर गुलाम वना लिया। इसपर भूटानके राजाके साथ युद्ध हुआ। अंगरेज जीते और अपनी प्रजाको गुलामीसे छुड़ा लाये। इनके शासन कालमे नहरोंका प्रवन्ध हुआ।

लार्ड मेओ

(१८६६-१८७२)

इनके समयमे महारानी विक्टोरियाके दूसरे पुत्र ड्यूक आफ एडिनवरा हिन्दुस्तानमे आये थे। जगह-जगह रेलें निकाली गयीं। कावुलके अमीरके साथ मित्रता दृढ़ की गयी। भारतके प्रादेशिक आमद्-खर्चका अच्छा वन्दोवस्त हुआ और शासन सम्वन्धी वहुतसे सुधार हुए। ये अण्डमनके शेर अली नामक एक कैदीके हाथसे मारे गये।

लार्ड नार्थव्रुक

(१८७२-१८७५)

इनके समयमे प्रिन्स आफ वेल्स (महाराज सप्तम एडवर्ड) हिन्दुस्तानमे आये थे। उनका वड़ी धूमधामसे स्वागत हुआ।

लार्ड लिटन

(१८७६-१८८०)

लार्ड लिटनके समयमे, पहली जनवरी सन् १८७७ ई० मे दिल्लीमे एक बहुत बड़ा दरबार हुआ। इसी दरबारमे महारानी विक्टोरिया भारतकी राज-राजेश्वरी बनीं। इस दरबारके कुछ ही दिन बाद दक्षिण भारतमे बड़े जोरका अकाल पड़ा, जिसमे पाँच लाख आदमियोकी मौत हुई। गवर्नमेण्टने पीड़ितोकी यथाशक्ति मदद की थी।

दूसरा अफगान युद्ध—लार्ड लिटनने काबुलमे एक दूत भेजा। किन्तु अमीर शेर अलीने उसे अपने राज्यमे पैठने न दिया, इसपर लार्ड लिटनने उससे लड़ाई छेड़ दी। अमीर डरके मारे राज्य छोडकर भाग गया और उसकी जगह उसका लड़का याकूब खाँ अमीर बनाया गया। इसने अङ्गरेजोसे सन्धि कर ली। इसी समयसे एक अङ्गरेज रेजिडेण्ट काबुलमे रहने लगा। परन्तु यह सन्धि भी अधिक दिन तक कायम न रह सकी। अफगानोंने अङ्गरेज रेजिडेंटको मार डाला इससे फिर लड़ाई शुरू हुई। अमीर सिंहासन छोड कर हिन्दुस्तानमे भाग आया और अंग्रेजी सेना अफगानोंको हरा कर लौटा लार्ड लिटनके समयमें प्रेसकी स्वतन्त्रता छीन ली गयी।

---

(३) १८३४ के बाद दस वर्षों तक जितने गवर्नर जेनरल हुए उनका संक्षेपमें वर्णन करो।

(४) अफगानोंकी दूसरी लड़ाईका बयान करो।

लार्ड डफरिन

(१८८४-१८८८)

इनके समयमें वर्माकी तीसरी लड़ाई हुई। पेगू और प्रोम अंग्रेजोंके अधिकारमें आये। वर्माका राजा थिबो कैदकर हिन्दुस्तानमें लाया गया। इनकी पत्नी लेडी डफरिनके उद्योगसे भारतीय स्त्रियोंके स्वास्थ्यरक्षणके लिए इङ्गलैण्डसे स्त्री डाक्टर बुलाई गयीं। इसके लिये बहुतसा धन इकट्ठा किया गया और लेडी डफरिन फण्ड कायम हुआ। १८८७ ई० में महारानी विक्टोरियाको राज्य करते ५० वर्ष हो गये, इसलिए बड़ी धूमधामसे जुबली उत्सव मनाया गया।

लार्ड लैन्सडाउन

(१८८८-१८९३)

इनके समयमें मणिपुरकी लड़ाई हुई। मणिपुरके राजाने आसामके प्रधान कमिश्नर तथा और भी कई एक अंग्रेज कर्मचारियोंको मार डाला। इस लड़ाईका यही कारण था। अंग्रेजोंने मणिपुरको दखल कर लिया और राजघरानेके एक लड़केको गद्दीपर बैठाकर उस राज्यकी देखभाल करने लगे। इनके समयमें तिब्बतियोंसे भी लड़ना पड़ा था। तिब्बतियोंने हारकर सन्धि कर ली। इनके अनु-

इन्हींके जमानेमें १९१० ई० की ६ ठी मईको सम्राट् सप्तम एडवर्डकी मृत्यु हुई। सम्राट् सप्तम एडवर्ड बड़े शान्ति-प्रिय और प्रजाको प्यार करने वाले थे।

लार्ड हार्डिंज (१९१०-१९१६)

लार्ड हार्डिंज

सन् १९१० ई० मे मिण्टोके चले जाने पर उनकी जगह लार्ड हार्डिंज वायसराय होकर आये। पञ्चम जार्ज और महारानी मेरीका राजतिलक १९११ ई० की १२ वीं दिसम्बरको दिल्लीमें हुआ था। यह भारतके इतिहासकी सबसे प्रधान घटना है। यह उत्सव बड़ी धूम-धामसे मनाया गया। इसमें भारतके सभी राजा महाराजा, नवाब, अमीर-उमरा और रईस शामिल हुए थे।

इसी समय सम्राट्ने घोषणा की, कि (१) भारतकी राजधानी कलकत्ताके बदले दिल्ली बनायी जाती है।

(२) बङ्गालका विभाग तोड़कर फिर एक कर दिया जायगा।

(३) बिहार, छोटानागपुर और उड़ीसा तीनों मिलाकर एक नया प्रदेश होगा और वह एक छोटे लाटके अधीन रहेगा।

(४) आसाम एक चीफ कमिश्नरके अधीन रहेगा। इसके

पञ्चम जार्ज

सिवा प्रजाकी शिक्षाके लिये सम्राट्‌ने ५० लाख रुपया प्रतिवर्ष और देनेकी घोषणा की। सन् १९१२ ई० के अप्रैल महीनेसे यह घोषणा काममें लाई गयी।

लार्ड चेम्सफोर्ड (१९१६-१९२१)

सन् १९१६ ई० के अप्रैलमे लार्ड हार्डिंजके जाने पर लार्ड चेम्सफोर्ड वायसराय होकर आये। इनके समयमें पंजाब, बिहार, आसाम और बंगालमें छोटे लाट [illegible] जगह गवर्नर नियुक्त हुए। [illegible] बहुत बडी लडाई भी [illegible] ही समयमे हुई, जिसमे [illegible]न्दुस्तानी सिपाहियोंने अपनी वीरतासे संसारको चकित कर दिया था। इसी समय अफगानकी तीसरी लडाई भी हुई, किन्तु शीघ्र ही रावलपिण्डीकी सन्धि होकर समाप्त हो गयी।
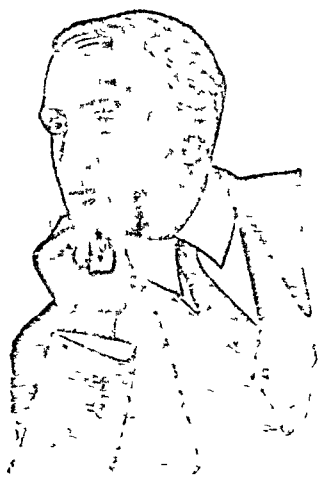
लार्ड चेम्सफोर्ड

सन् १९२० ई० मे भारतकी राष्ट्रीय महासभाने स्वराज्यके लिये सरकारके विरुद्ध असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया, जिसका [illegible] कारण, पञ्जावके जालियानवाला बागका हत्याकाण्ड था। इनके महात्मा गान्धी हुए। इसी समय विजयी मित्र दलने टर्कीके [illegible] बुरा बर्ताव किया, जिसके कारण खिलाफत आन्दोलन भी हिन्दुस्तानमे जारी हो गया। इन सब कारणोंसे वायसरायकी सभा और कानून बनाने वाली बडी सभामे बहुतसे परिवर्तन हुए।

लार्ड रीडिंग (१९२१-१९२६)

लार्ड चेम्सफोर्डके बाद १९२१ ई० मे लार्ड रीडिङ्ग आये। इनके समयमे असहयोग आन्दोलनने खूब जोर पकड़ लिया था। इसी समय प्रिन्स आफ़ वेल्स भारतमे आये थे, किन्तु उनके आनेका हिन्दुस्तानियों पर कुछ भी असर न पड़ा। इनके जमानेमे नमकका

लार्ड रीडिंग

कर बढ़ा, [illegible] और [illegible] कानून [illegible] दिये गये। फौजदारी कानून [illegible] महात्मा [illegible] असहयोग आन्दोलनके कारण पकड़ लिये गये और फिर छूट [illegible]

राजद्रोहके [illegible] विचार किये ही कितने ही आदमी कैद कर लिये गये। रीडिंगके आने-जाने पर असहयोग आन्दोलन

लार्ड वेलिंगडन (१६३१-१६३६)

लार्ड इरविनका शासन काल समाप्त होने पर वे विलायत चले

लार्ड वेलिङ्गडन

गये और उनके स्थानपर लार्ड वेलिङ्गडन, वायसराय होकर (१६३१ अप्रैल) आये। आप पहले यहाँ बम्बई और मद्रासके गवर्नर रह चुके हैं। आप बड़े सुयोग्य वायसराय थे। आपके समयमे भारतकी

ने सम्राट् और सम्राज्ञीके दीर्घजीवनके लिए भगवान्से हार्दिक प्रार्थना की। पर "अपने मन कुछ और है विधिनाके कुछ और" के अनुसार सारी प्रार्थनाएँ निष्फल हुईं। एक वर्ष भी पूरा नहीं होने पाया कि २० जनवरी सन् १९३६ ई० मे सम्राट्का स्वर्गवास हो गया। देश भरमें शोक छा गया। सारे देशमे शोक सभाएँ की गयीं और मुक्त कण्ठसे सम्राट्का गुणगान किया गया।

सम्राट् अष्टम एडवर्ड—२० जनवरी १९३६ से १२ दिसम्बर १९३६ तक—अपने पिता सम्राट् पञ्चम जार्जकी मृत्युके वाद प्रिन्स आफ् वेल्स अष्टम एडवर्डके नामसे २० जनवरी १९३६ ई० से राज करने लगे। किन्तु लगभग ग्यारह महीना राज करनेके वाद १२ दिसम्बर १९३६ ई० शनिवारको आपने राजसिंहासन त्याग दिया। यही नहीं, सिंहासन त्याग कर वे स्वदेश छोडकर भी चले गये। यह ब्रिटिश साम्राज्यकी इस कालकी एक असाधारण घटना है। जिस प्रधान वातके कारण सम्राट् एडवर्डको सिंहासन त्याग करना पड़ा है वह है उनका एक अमेरिकन महिलासे विवाह करनेका निश्चय। सम्राट्का यह विवाह ब्रिटेनके प्रधान मन्त्री मिस्टर वाल्डविन तथा प्रधान धर्माचार्यको ठीक नही जँचा और उन्होने सम्राट् से अपना विरोध प्रकट किया। पर सम्राट् अपने निश्चय पर अटल रहे और उन्हे जब मालूम हुआ कि प्रधान मन्त्री मिस्टर वाल्डविन तथा धर्माचार्यके पक्षमे संगठित लोकमत है तब उन्होने अपने भिमानकी रक्षाके लिये सम्राट् जैसे ऊँचे पदका त्याग कर देना ही उचित समझा। यही नहीं, वे तत्काल इंगलैण्ड छोडकर एक

साधारण नागरिकके रूपमें अपना शेष जीवन व्यतीत करनेको आस्ट्रिया होते हुए [illegible] चले गये। तथा फ्रांसके चेट्यूडे कैंडे
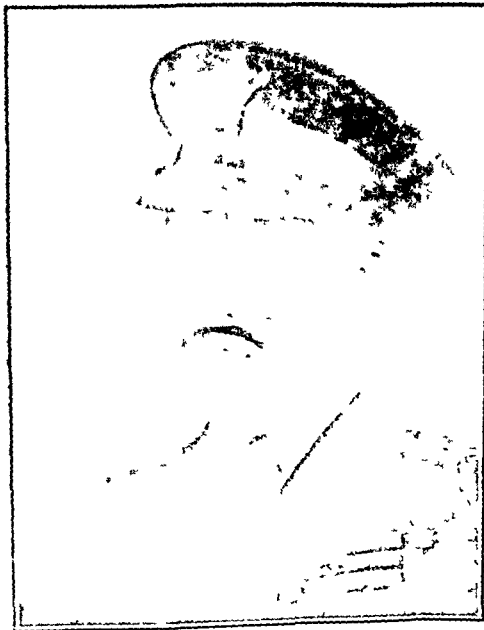
अष्टम एडवर्ड

नामक स्थानमें उनका विवाह भूतपूर्व श्रीमती सिम्पसनके साथ सम्पन्न हो गया।

सम्राट् षष्ठ जार्ज और सम्राज्ञी एलिजाबेथ

बादशाह अष्टम एडवर्डके राजसिंहासन त्याग करने पर १२ दिसम्बर १९३६ ई० को उनके सहोदर भाई यार्कके ड्यूक बादशाह

षष्ठ जार्ज

जार्ज षष्ठके नामसे सम्राट् और उनकी पत्नी यार्ककी डचेज एलिज
सम्राज्ञी घोषित की गयीं। १२ मई १९३७ को बड़े धूमधा
नगरमे सम्राट् जार्जका राज्याभिषेकोत्सव हुआ। व

स्वर्गीय बादशाह जार्ज पंचमके दूसरे पुत्र हैं। आपका जन्म १४ दिसम्बर १८९५ ई० को हुआ था। सम्राट् पद जार्ज उच्च शिक्षित और भारतकी अवस्थासे पूर्ण परिचित हैं। इस समय आप ४१ वर्षके हैं। आशा है, आपका शासन काल चिरस्थायी और आपके स्वर्गीय पिता जैसा ही गौरवशाली होगा।

लार्ड लिनलिथगो (१९३६ से चालू)

लार्ड वेलिंगडनका शासनकाल समाप्त होने और उनके विलायत
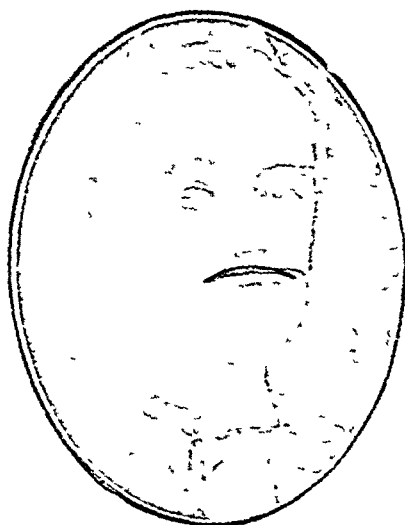
लार्ड लिनलिथगो

चले जाने पर उनके स्थान पर लार्ड लिनलिथगो वायसराय होकर